Journal of Research in Education - ISSN (P) : 2347-5676
ISSN (O) : 2582-2357

माता–पिता के शैक्षणिक स्तर का माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के गृह–परिवेश पर प्रभाव

नेहा
डा॰ मधु सिंह

सार

परिवार के सदस्यों द्वारा निर्मित घर के वातावरण को ही 'गृह–परिवेश' कहते हैं। बच्चों के औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा में परिवार की मुख्य भूमिका होती है। सामाजिक परिवेश का ज्ञान भी बच्चे परिवार के वातावरण से ही सीख पाते हैं। परिवार का मुख्य कार्य भावी जीवन की आधारशिला का निर्माण करने के लिए बच्चों को अपने भाषा का ज्ञान, नैतिक व सामाजिक प्रशिक्षण, गृहपरिवेश द्वारा संभव होती है।

इस शोध का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के गृह–परिवेश पर माता एवं पिता के शैक्षणिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना है। इस शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है, जिसमें प्रतिदर्श के रूप में पटना शहर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों का चयन किया गया है। 170 आँकड़ों के संग्रह हेतु डॉ॰ हरप्रीत भाटिया एवं डॉ॰एन॰के॰चड्ढा द्वारा प्रमाणित गृह–परिवेश मापनी को उपकरण के रूप में प्रयोग किया है। टी–परीक्षण का परिकल्पना के परीक्षण हेतु प्रयोग किया गया है। माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के गृह–परिवेश पर लिंग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। वहीं, माता एवं पिता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर उनके गृह–परिवेश में सार्थक अंतर पाया गया।

प्रमुख शब्द : *पिता–माता का शैक्षणिक स्तर, गृह–परिवेश, घर का वातावरण।*

परिचय

'परिवार' शिक्षा का सबसे प्रमुख अनौपचारिक तथा औपचारिक साधन दोनों है। बच्चों की शिक्षा में घर या परिवार की मुख्य भूमिका होती है। सामाजिक परिवेश का ज्ञान भी बच्चे परिवार के वातावरण से ही सीख पाते हैं। परिवार के सदस्यों द्वारा निर्मित घर के वातावरण को ही 'गृह–परिवेश' कहते हैं। परिवार एक छोटी–सी सामाजिक संस्था है जिसमें रहते हुए बालक माता–पिता के अतिरिक्त भाई–बहनों तथा अन्य संबंधियों के संपर्क में आता है। सभी सदस्य एक दूसरे पर अपना प्रभाव डालते हैं। बालक परिवार के प्रत्येक सदस्य से प्रत्येक क्षण प्रभावित होता है तथा अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है। इस प्रकार परिवार बालक पर अपना स्थायी प्रभाव अंकित करता है। बालक वैसा ही बनता है, जैसा उसका घर होता है। घर के वातावरण के कारण गांधीजी ने प्रेम और सत्य के सिद्धांतों को अपनाया। शिवाजी ने अपनी माता से रामायण और महाभारत की शिक्षा प्राप्त कर के ही मराठा राज्य की नींव डाली। भारत में प्राचीन काल से ही बालक की शिक्षा पर घर के प्रभाव को अत्यंत महत्व दिया गया है।

कुछ विद्वानों ने परिवार के महत्व पर बल देते हुआ कहा है, ''माताएँ बालकों की आदर्श गुरू होती है तथा परिवार द्वारा प्राप्त की गई अनौपचारिक शिक्षा सबसे अधिक प्रभावशाली और प्राकृतिक होती है'' एवं ''शैक्षिक इतिहास के सभी स्तरों पर परिवार, बालक की शिक्षा का प्रमुख साधन है।''

आज वर्तमान काल में परिवार का महत्त्व कम हो गया है परन्तु, बालक की शिक्षा कभी भी उचित ढंग से नहीं हो सकती जब तक कि परिवार का सहयोग प्राप्त न हो। एक बालक शिक्षा के लिए विद्यालय जाता है, परंतु वह वहाँ चौबीस घंटों में केवल पांच घंटे ही व्यतीत करता है, शेष

समय उसका घर पर ही व्यतीत होता है। अतः एक बालक की शिक्षा पर जो प्रभाव माता पिता का हो सकता है, वह किसी और संस्था का नहीं हो सकता है। माता पिता जितने शिक्षित होंगे बच्चे का विकास उतना ही अच्छा होगा। यही कारण है कि शिक्षा प्रदान करने में माता–पिता का सहयोग आवश्यक है। भावी जीवन की आधारशिला का निर्माण करने के लिए बच्चों को अपनी भाषा एवं उच्चारण का ज्ञान, नैतिक व सामाजिक प्रशिक्षण, दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार, मूल्यों एवं आदतों का विकास, पंसद व रूचियों का विकास, प्रेम की शिक्षा, अभिभावक की शिक्षा से सीधे प्रभावित होती है।

सम्बंधित साहित्य की समीक्षाः

राठी (2017) ने अपने शोध माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अध्ययन की आदतों पर घर के वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया एवं पाया कि लड़कों एवं लड़कियों के घर का महौल अलग–अलग नहीं था लेकिन अध्ययन की आदतों में सार्थक अंतर था। फेहरमन, कीथ एवं शीमरस (2015) ने अपने शोध में पाया कि माता–पिता की भागीदारी अगर प्रत्यक्ष रूप से बच्चों के जीवन में होती है तो उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के साथ–साथ व्यक्तिगत संबंध भी अच्छा होता है। वहीं अगर माता–पिता अपने बच्चों के साथ अप्रत्यक्ष रूप से पेश आते है, तो उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में भी कमी पायी जाती है। वेडेल (2011) ने अपने शोध में माता–पिता की सहभागी क्रियाकलापों और छात्रों की निष्पति के बीच में सार्थक संबंध की पहचान के अध्ययन में पाया कि समुदाय आधारित माता–पिता की सहभागी क्रियाकलापों, माता–पिता की शैक्षणिक योग्यता, पारवारिक आय और छात्रों की शैक्षणिक निष्पत्ति के बीच उच्च सार्थक साहचर्य है।

अध्ययन की सार्थकता

हमारे समाज में अधिकांश परिवार अपने बच्चों की शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान नहीं देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ अभिभावकों को अपने बच्चों के प्रदर्शन के बारे में गलत धारणा है। वे नहीं जानते हैं कि स्कूलों में बच्चे के प्रदर्शन में उनके मार्गदर्शन और प्रोत्साहन की अहम् भूमिका होती है। घर का वातावरण कक्षा में बच्चों द्वारा दिखाए जाने वाले सीखने के व्यवहार को प्रभावित करता है और सीखने के व्यवहार जैसे योग्यता, प्रेरणा, ध्यान और दृढ़ता शैक्षिक सफलता के महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता हैं। इस शोध के परिणाम शोधार्थी एवं अभिभावकों के लिए महत्वपूर्ण होंगे। यह अध्ययन गृह–परिवेश को प्रभावित करने वाले कारकों को बेहतर समझने में अतिरिक्त अनुभवजन्य आँकड़े की प्राप्ति में सहायक होगी।

समस्या कथनः माता–पिता के शैक्षणिक स्तर का माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के गृह–परिवेश पर प्रभाव।

संक्रियात्मक परिभाषाः

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी : वैसे विद्यार्थी जो नवम् एवं दशम् वर्ग में पढ़ते हैं। इस अध्ययन में नवम् वर्ग के विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया है।

सरकारी विद्यालयः वैसे विद्यालय जिसे सरकार के द्वारा नियंत्रित एवं संचालित किया जाता है।

गैर–सरकारी विद्यालयः वैसे विद्यालय जिसका संचालन, प्रबन्धन एवं नियंत्रण निजी हाथों में होता है।

गृह–परिवेशः गृह–परिवेश से तात्पर्य उन घरेलू जीवन के पहलुओं से है जो उनकी जीवन स्थितियों में योगदान करते हैं। डॉ॰ हरप्रीत भाटिया एवं डॉ॰ एन॰के॰चड्डा द्वारा प्रमाणित गृह–परिवेश मापनी द्वारा प्राप्त स्कोर को गृह–परिवेश के रूप में लिया गया है।

शोध उद्देश्य

i) माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के गृह परिवेश में अंतर का पता लगाना।

ii) माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के माता की शैक्षणिक स्तर के आधार पर उनके गृह परिवेश में अंतर का पता लगाना।

iii) माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं के पिता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर उनके गृह परिवेश में अंतर का पता लगाना।

परिकल्पनाएँ

i) माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के गृह परिवेश में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

ii) माध्यमिक विद्यालय के छात्र – छात्रों में माता की शैक्षणिक स्तर के आधार पर उनके गृह परिवेश में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

iii) माध्यमिक विद्यालय के छात्र – छात्राओं में पिता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर उनके गृह–परिवेश में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रतिदर्श के रूप में पटना के सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालय के 170 छात्र–छात्राओं का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। उपकरण के रूप में डॉ॰ हरप्रीत भाटिया एवं डॉ॰ एन॰ के॰ चड्ढा द्वारा प्रमाणित गृह परिवेश मापनी का उपयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन, टी॰ अनुपात का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की परिसीमाएं–

i) इस अध्ययन के लिए केवल पटना शहर के चार माध्यमिक विद्यालय का चयन किया गया है।

ii) प्रतिदर्श केवल दो सरकारी एवं दो गैर सरकारी विद्यालय से लिया गया है।

iii) प्रतिदर्श में केवल 170 छात्र–छात्राओं का ही चयन किया गया है।

आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्याः

नल परिकल्पना 1 : माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्रों के गृह परिवेश में कोई सार्थक अंतर नहीं है।–

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसका सारांश तालिका संख्या 1 में दर्शाया गया हैः

तालिका सं॰ 1 : माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्रों के गृह परिवेश का माध्य, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात

लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी॰ – अनुपात	सार्थकता का स्तर
छात्र	77	137.45	15.51	3.127	1.130	सार्थक अंतर नहीं है।
छात्रा	93	135.01	11.99	1.548		

उपयुक्त तालिका सं॰ 1 से स्पष्ट है कि परिकलित टी–अनुपात का मान है कि 1.130 है जो कि तालिका मूल्य से कम है। अतः नल परिकल्पना स्वीकृत की गई है अर्थात् लिंग के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के गृह–परिवेश में सार्थक अंतर नहीं है।

नल परिकल्पना 2 : माध्यमिक विद्यालय के छात्र – छात्राओं में माता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर उनके गृह–परिवेश में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु टी– परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसका सारांश तालिका संख्या 2 में दर्शाया गया हैः

तालिका सं॰ 2 : माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्रों का माता की शैक्षणिक स्तर के आधार पर गृह परिवेश का माध्य, मानक विचलन मानक त्रुटि एवं, टी–अनुपात

माता की शिक्षा	संख्या	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी॰ – अनुपात	सार्थकता का स्तर
मैट्रिक	89	132.06	12.94	1.88	0.94	सार्थक नहीं है।
इंटरमिडिएट	18	134.77	10.79	6.46		
मैट्रिक	89	132.06	12.94	1.88	4.41**	0.01 स्तर पर सार्थक है।
स्नातक	42	143.28	13.87	4.58		
मैट्रिक	89	132.06	12.94	1.88	2.61*	0.05 स्तर पर सार्थक है।
स्नातकोत्तर	21	140.09	12.62	7.58		
स्नातक	42	143.28	13.87	4.58	0.91	सार्थक अंतर नहीं है।
स्नातकोत्तर	21	140.09	12.62	7.58		
इंटरमिडिएट	18	134.77	10.79	6.46	2.56*	0.05 स्तर पर सार्थक है।
स्नातक	42	143.28	13.87	4.58		
इंटरमिडिएट	18	134.77	10.79	6.46	1.42	सार्थक नहीं है।
स्नातकोत्तर	21	140.09	12.62	7.58		

उपयुक्त तालिका सं॰ 2 में माता की शैक्षणिक योग्यता के आधार पर परिकलित टी॰ अनुपात के मान से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के गृह–परिवेश में सार्थक अंतर है। अतः नल–परिकल्पना स्वीकृत नहीं की जा सकती है। अर्थात् माता की शैक्षणिक योग्यता के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के गृह परिवेश में सार्थक अंतर है।

माता की शैक्षणिक योग्यता के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के गृह–परिवेश का माध्य एवं मानक विचलन का ग्राफीय प्रदर्शन आरेख संख्या 2 में दर्शाया गया हैः

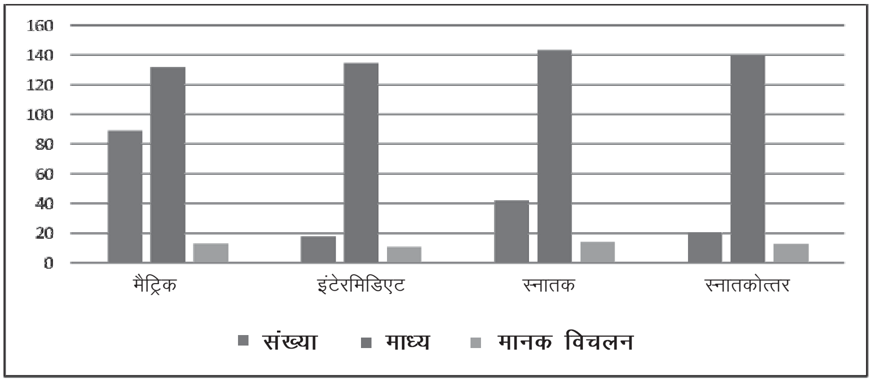

आरेख संख्या 1 : माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं की माता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर गृहपरिवेश का माध्य एवं मानक विचलन का ग्राफीय प्रदर्शन–

नल परिकल्पना : 3 माध्यमिक विद्यालय के छात्र –छात्राओं के पिता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर उनके गृह–परिवेश में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु टी– परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसका सारांश तालिका संख्या 3 में दर्शाया गया हैः

तालिका सं॰ 3 : माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के पिता की शैक्षणिक स्तर के आधार पर गृह–परिवेश का माध्य, मानक विचलन मानक त्रुटि, एवं टी– अनुपात

पिता की शिक्षा	संख्या	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी॰ – अनुपात	सार्थकता का स्तर
मैट्रिक	54	133.72	13.17	3.21	1.13	सार्थक नहीं है।
इंटरमिडिएट	16	129.75	11.98	8.97		
मैट्रिक	54	133.72	13.17	3.21	1.24	सार्थक नहीं है।
स्नातक	53	136.15	5.75	0.62		
मैट्रिक	54	133.72	13.17	3.21	3.63**	0.01 स्तर पर सार्थक है।
स्नातकोत्तर	47	141	6.12	0.79		
स्नातक	53	136.15	5.75	0.62	4.06**	0.01 स्तर पर सार्थक है।
स्नातकोत्तर	47	141	6.12	0.79		
इंटरमिडिएट	16	129.75	11.98	8.97	2.06*	0.05 स्तर पर सार्थक है।
स्नातक	53	136.15	5.75	0.62		
इंटरमिडिएट	16	129.75	11.98	8.97	3.59**	0.01 स्तर पर सार्थक है।
स्नातकोत्तर	47	141	6.12	0.79		

उपयुक्त तालिका सं॰ 2 में पिता की शैक्षणिक योग्यता के आधार पर परिकलित टी॰ अनुपात के मान से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के गृह–परिवेश में सार्थक अंतर है। अतः नल परिकल्पना स्वीकृत नहीं की जा सकती है। अर्थात् पिता के शैक्षणिक योग्यता के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के गृह–परिवेश में सार्थक अंतर है। दत्त

विश्लेषण से यह पता चलता है कि जिनके पिता जितना अधिक पढ़े लिखे हैं उन छात्र–छात्राओं के गृह–परिवेश बेहतर पाए गए।

पिता की शैक्षणिक योग्यता के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के गृह–परिवेश का माध्य एवं मानक विचलन का ग्राफीय प्रदर्शन आरेख संख्या 2 में दर्शाया गया है:

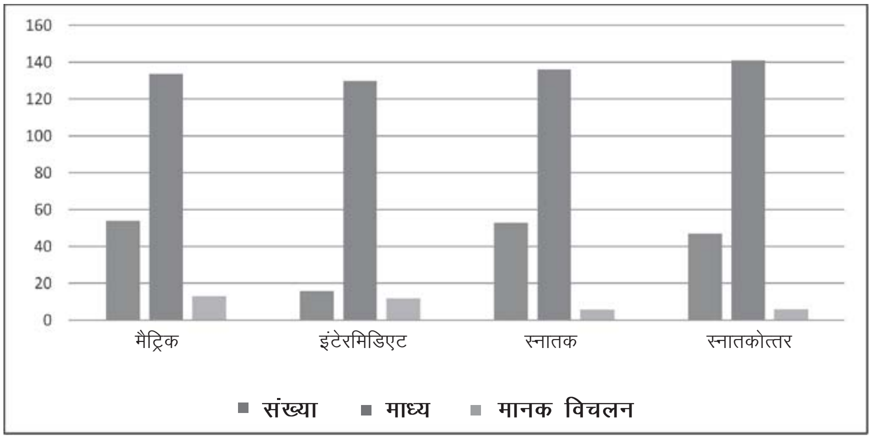

आरेख संख्या 2 : माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं के पिता के शैक्षणिक स्तर के आधार पर गृह–परिवेश का माध्य एवं मानक विचलन का ग्राफीय प्रदर्शन

निष्कर्ष

यह अध्ययन ''माता पिता के शैक्षणिक स्तर का माध्यमिक –विद्यालय के विद्यार्थियों के गृह परिवेश पर प्रभाव से संबंधित है। इस शोध से संबंधित सांख्यिकी परीक्षणों एवं व्याख्या के आधार पर यह पाया कि छात्र–छात्राओं के गृहपरिवेश में अंतर नहीं पाया गया। वहीं माता पिता के विभिन्न शैक्षणिक योग्यताओं के स्तर होने के कारण छात्र–छात्राओं के गृह–परिवेश में अंतर पाया गया । दत्त विश्लेषण में पाया गया कि जिनके माता–पिता अधिक पढ़े लिखे हैं उन छात्र–छात्राओं के गृह परिवेश–बेहतर पाए गए।

संदर्भ सूची–

कौर, जे॰, कौर, आर॰, और राणा, जे॰ एस॰ (2017). घर का माहौल पर किशोरों के बीच आत्म अवधारणा के संबंध के रूप में शैक्षणिक उपलब्धि, स्टडीस ऑनहोम एंड कम्यूनिटी साइन्स 3 (1)

डोलेय, एल॰ (2017). किशोरों की शैक्षणिक उपलब्धि पर गृह पर्यावरण कारकों का प्रभाव https://www.questia.com/library/journal/1P4-2015382863/the-impact-of-home-environment-factors-on-academic

डौलता, एम॰एस॰एन॰ (2017). बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर घर का महौल का प्रभाव मानव पारिस्थिकि के जर्नल 23(1). https://doi.org/10.1080/09709274.2008.//906058

फेहरमन, पी॰जी॰, किथ टी॰ जेड॰, रेमेरस टी॰ एस॰ (2015) स्कूल लर्निंग पर होम प्रभावः हाई स्कूल ग्रेड : पर माता–पिता की भागीदारी के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव। https://doi.org/10.1080/00220671.1987.10885778

यादव, एस॰ के॰ (2018) माध्यमिक स्तर पर अध्यन्नरत विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उनके शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. International Journal of Advanced Educational Reserach 3(2)

राठी, एस॰ (2017). इफेक्ट ऑफ होम एनवायरमेंट ऑन स्टडी हैबिट्स ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट. इंडियन जर्नल आफ अप्लाइड रिसर्च.

(7)4.https://www.worldwidejournals.com/indian-journal-of-applied-research-(IJAR)/fileview/April_2017_1491815651_.164 pdf

वनीता, जे॰, एवं पाप्पतू, जे॰ (2017) माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में विज्ञान विषय की उपलब्धि में घर. के माहौल का प्रभाव. इंटरनैशनल जर्नल औफ रिर्सच ग्रंथालय, 5(6), 428–36. https://doi.org/10.5281/zenodo.821728

वाइल्डर, एस॰ (2013) शैक्षणिक उपलब्धि पर माता–पिता का हाथ होने का प्रभाव एक मेटा–संश्लेषण एडुकेसनल रिवियू 66(3) https://doi.org/ 10.1080/00131911.2013.780009

वेडेल, एन॰ (2011) माता पिता की सहभागी क्रियाकलापों और छात्रों की निष्पति के बीच–मेंसार्थक संबंध की पहचान लधु शोध प्रबंध, शोध सारिका अंतर्राष्ट्रीय 72(12)

शर्मा, आर॰ (2019) हिंदी में प्राथमिक छात्रों के संबंध में लिंग और स्कूल के प्रकार में शैक्षिक उपलब्धि.https://rrjournals.com/past-issue/academic- achievement-in-hindi-language-of-primary-school-studetns- in-relation-to-their-gender- and- type-of-school/